तन इस कारण मैं चाहती हूँ

तन इस कारण मैं चाहती हूँ,
यह यन्त्र है तुझको पाने का।

बुद्धि इस कारण चाहूँ पिया,
यह मन्त्र कहे मिल जाने का।।

ऐसी राहों पर ला कर के,
मुझको न अब तुम लूटो पिया।

इक राम धन ही मैं चाहती हूँ,
उसको ही तू अब दे दे पिया।।

प्रभु कर जोड़े तुझे कहती हूँ,
अब तो तुम मेरी मान लो।

कब से हूँ बुला रही मैं पिया,
अब तो इस मन की जान लो।।

जीवन न दो यह तन ले लो,
पर नाम न मुझसे लेना पिया।

तन को कुछ भी अब हो पिया,
मेरा राम नाम न लेना पिया।।

- परम पूज्य माँ

(प्रार्थना शास्त्र नं. १, प्रार्थना नं. ३४५ - २.४.१९६०)

अनुक्रमणिका

३. जितना जितना आप
अपने से भरपूर करते जाते.
'मैं' स्वयं से खाली होने लगती!.
श्रीमती पम्मी महता

७. करम खंड की बाणी जोरु।
तिथै होरु न कोई होरु।
अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से

१४. दिव्य जीवन..
दहलीज़ पे माटी पड़ी, माँग में हम भर लें..
माटी वह किसकी थी, इस पर न चित्त धरें!
पूज्य छोटे माँ द्वारा संकलित

१८. ..श्रुति जागृत करती है,
बाह्य पाये नहीं परम मिले!
'मुण्डकोपनिषद्' में से

२३. 'सत् का अभाव नहीं होता
और असत् का भाव नहीं होता..'
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता - बाँसुरी में जीवन धुन

२८. जीवात्मा बलवान है
अर्पणा प्रकाशन 'ज्ञान विज्ञान विवेक' में से

३३. मेरी 'मैं' को निर्-आवरण करते हुये,
मेरी सूरत और सीरत के दर्शन कराने लगे!
श्रीमती पम्मी महता

समाचार पत्र

❖ ❖ ❖

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा दिसम्बर २०१८ को प्रकाशित तथा
सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

जितना जितना आप

अपने से भरपूर करते जाते..

'मैं' स्वयं से खाली होने लगती!

श्रीमती पम्मी महता

हे श्री हरि माँ प्रभु जी, आपके चलते क़दमों में, उनकी आहट में, आप ही का कृपा प्रसाद छुपा रहता.. क्योंकि आपने जितने जितने क़दम बाहर लिये, वही हृदय में भी आप ही ने अंकित किये। हृदय-स्थली पर पड़े आप श्री हरि माँ के क़दम, यही बताते मुझे कि आपने जिस हृदय को एक बार भी छू लिया तो वह आपके लिये पराया होता ही कब है..

आप तो इस कनीज़ अपनी को, सत् पथिक ही बना लेते हैं। कैसे कैसे अपनी दैवी सम्पदा के बीज डालते जाते हैं.. इन्हें ही तो आपकी कृपा से अंकुरित होना है! आपने ही

तो इस मरु-भूमि को तैयार किया अपनी प्रेम गंगा बहा कर, जो आंतर की गंदगी को बहा कर ले गई!

हे गंगा माँ आप नहीं जानतीं, परम पूज्य श्री हरि माँ ने जब अपने प्रेम स्वरूप को गंगावत् बहाना शुरु किया तो सारी आंतर की गंदगी जो 'मैं' जनित थी, बहा कर ले गईं और इस मनोभूमि को किस क़दर उपजाऊ कर लिया.. तभी तो आपकी दैवी सम्पदा के बीज अंकुरित हो कर फूट पड़े!

जिस पथ से पूर्णतया अनजान थी.. आपने अपने असीम अनुग्रह व प्रेम से ही उसे पल-पल नवाज़ते हुये मुझे भी प्रेरित किया, 'आ! तुझे भी उसी पथ पर ले चलूँ..' कैसा परम सौभाग्य देकर अपनी करुण-कृपा का, इसे यूँ प्रसाद ग्रहण करवाया। इसे चखने के बाद तो इसी प्रसाद की दिव्य अनुभूति होने लगी.. जितना जितना चखती.. यह और ही मुझे मनोहारी भी लगता और प्रभुमय भी!!

कैसी प्रेम की सरस सुधा बहाते हुये, आपने बिन कहे, मुझे इसी सत्य से अवगत करवाया कि इस आंतर के भाव-भावना आप ही हैं.. साधक, साधना व साध्य भी आप स्वयं ही हैं.. जब आप स्वयं ही मूर्त हृदय में बसा देते हैं, तभी हर असाध्य को साध्य बना, अपनी ही आराधना के सुमन खिला कर साधक को इस विलक्षण आशीर्वाद से नवाज़ते हुये आगे से आगे क़दम बढ़ाने को प्रेरित किये चले जाते हैं।

जितना ही आप अपने से मुझे भरपूर करते, मैं स्वयं से खाली होने लगती! आपके सब्र की इंतिहा देखी.. इन क़दमों को कभी रुकने नहीं दिया और न ही मुझे निराश होने देते कभी! नव उमंग, नव उत्साह से आपने इस आंतर मन को श्रृंगारित जो किया हुआ था। फिर मन की प्यास कैसे न बढ़ती.. कोई बुझाने का प्रयास करे ही नहीं, तो ज़ाहिर है वह निरन्तर बढ़ेगी ही..

व्यथित हृदय पे, हे परम दयालु नाथ, आप अपने प्रेम का लेप लगा कर मुझे हर पल सहलाते हुये, मेरे ही ज़ख़्मों को भरते हुये निज प्रेम से.. सारी खाइयों को मेरी पाटते ही चले गये! आपने तो सच माँ, इसे आह भरने की भी फ़ुरसत ही नहीं दी। मगर जीवन में वह पल भी आये, जब आहें ही आहें मुझे व्यथित करने लगीं..

हृदय रोई-रोई रुख़सार से ढलता हुआ यही दुआ पल-पल करने लगा, "हे हृदयेश्वर! मेरे परमेश्वर! मुझे नहीं पता, इन भीषण परिस्थितियों में जो निहित आप विभूति पाद का प्रसाद है, वह तो मैं नहीं देख पा रही.. मगर इतना जानती हूँ आप इतनी कठिन परीक्षा में डाल मुझे कुछ ऐसा देने वाले हैं जो इस परीक्षा के कारण टूट कर बिखर न जाऊँ! वहाँ से मेरे मालिक मुझे अवश्य बचा कर लिवा ले जायेंगे.."

मगर मन का यह तूफ़ान मुझ में थमने का नाम ही नहीं ले रहा था, बहुत ही कठिन

परीक्षा की घड़ी थी! मैं नहीं चाहती थी कि आप माँ से मेरा विश्वास डोल जाये.. बस स्थिर चित्त से इन्हीं आपके क़दमों में पड़ी रहना चाहती थी.. मुझ निसहाय का सहारा एक आप ही तो थे! इसलिये 'मन को कमज़ोर भी न होने दें आप..' यह प्रार्थना भी साथ साथ करती जाती। 'हे ईश, इस अपनी नमानी को आप मुझ से ज़्यादा जानते हैं, इसलिये इस परिस्थिति में भी आप ही आप मुझे Protect किये रहना.. जब तक यह परिस्थिति गुज़र न जाये!'

मेरी कही-अनकही प्रार्थनाओं को आप माँ प्रभु जी ने कभी ठुकराया ही नहीं। आप माँ प्रभु जी की इस अहेतुकी कृपा को जब बारम्बार अपने ज़हन पे पाती हूँ, तो धन्य धन्य

कही आप ईश को धन्यवाद ही करती रहती हूँ!

फले फूले यह बग़िया तोरी,

जिसको आपने है ख़ुद ही सजाया।

काँटे सभी बीन बीन कर,

निज हाथों से आप बाग़बान ने इसे सँवारा!!

कैसे कैसे छलनी हृदय हुआ होगा आपका व कैसे कैसे चुभे होंगे काँटे आपको, यह सोच कर ही अपना दर्द छोटा लगने लगता। यह दोनों ही सत्य थे उस पल के, मेरे जीवन में.. लगता था दर्द का दरिया ही बन गई हूँ, मगर उम्मीद की किरण ने मेरा साथ कभी नहीं छोड़ा था!

आप माँ का दामन हाथ में हरदम देख कर एक निश्छल धारा अखियों से बह निकलती और आपके श्री चरणन् में जा बिछ जाती। मगर जीवन की इस दर्द की पहेली में भी उलझी रहती.. कभी तड़प कर कहती, "कहिये न माँ, कहाँ हैं आप? क्यों छुप कर यह तमाशा देख रहे हैं? क्या मेरे सब्र का इम्तिहान है यह.."

कभी धीरज बँधाती स्वयं को.. इस वक्त आपके आश्वासन की किस क़दर ज़रूरत थी मुझे, रोई-रोई यही कहती, "अब तो आ जाइये ना माँ! बहुत अधीर हो रही हूँ.. गर इसकी तड़प को अभी और आपने तड़पाना है तो तड़पा लीजिये। मगर मुझे संकट सागर से पार ले जाने की सामर्थ्य बन कर आप स्वयं आ जाइये। गर मेरी पुकार 'मैं' जनित है तो हे माँ, इसे भस्मसात् कर लीजिये.. जो पूर्णतः आप पर ही छोड़ दूँ अपने को!"

ऐसी आप विभूति पाद श्री हरि माँ प्रभु जी की लीला थी, जो अपने ही अनुराग के पराग को बिखेरती हुई व मन्त्र-मुग्ध करती हुई, मुझे भी अपनी कशिश देकर.. अपने सौन्दर्य का भरपूर आकर्षण देकर.. मुझे निरन्तर अपनी ही ओर लिवा ले जाने का असीम अनुग्रह करी, मुझे अपनी अनन्त कृपाओं में ले आई!

हे मेरे स्वामी, हे मेरे मालिक, इतना ही कर दें, जो आप ही आप से मेरी निगाहें उठें ही नहीं.. परीक्षा की घड़ी में जो इस कनीज़ आपकी का चित्त आप ही में स्थिर रहे। आमीन!

हरि ओऽम् तत्सत् परब्रह्म परमेश्वर तू

हरि ओऽम् ❖

करम खंड की बाणी जोरु।
तिथै होरु न कोई होरु।

गतांक से आगे –

पौड़ी ३७

करम खंड की बाणी जोरु।
तिथै होरु न कोई होरु।
तिथै जोध महाबल सूर।
तिन महि रामु रहिआ भरपूर।
तिथै सीतो सीता महिमा माहि।
ताके रूप न कथने जाहि।
न ओहि मरहि न ठागे जाहि।
जिन कै रामु वसै मन माहि।

तिथै भगति वसहि के लोअ।
करहि अनंदु सचा मनि सोइ।
सच खंडि वसै निरंकारु।
करि करि वेखै नदरि निहाल।
तिथै खंड मंडल वरभंड।
जेको कथै त अंत न अंत।
तिथै लोअ लोअ आकार।
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार।
वेखै विगसै करि वीचारु।
नानक कथना करड़ा सारु।।३७।।

शब्दार्थ : *कृपा खण्ड की बाणी शक्तिवान होती है, वहाँ और कोई दूसरा नहीं होता। वहाँ महाबली योद्धा और शूरवीर होते हैं। उन सब में परमात्मा ही व्याप्त हो रहा है। उन्होंने अपने मन को उस परमात्मा की स्तुति में लगा रखा है। उन परमेश्वर के रूप का कथन नहीं किया जा सकता। जिनके मन में परमात्मा बसता है, न वह मरते हैं और न ही ठगे जाते हैं। वहाँ अनेक लोकों के भक्त बसते हैं। वह भक्त मन में सच्चा आनन्द प्राप्त करते हैं। सच्च खण्ड (सत्य लोक) में वह निरंकार परमात्मा बसता है। वह सब पर अपनी कृपादृष्टि कर कर के प्रसन्न होता है। वहाँ पर ही खण्ड (नक्षत्र), मण्डल (पृथ्वी) और ब्रह्माण्ड (सम्पूर्ण सृष्टि) हैं। यदि कोई उसकी महिमा का कथन करे तो उसका अन्त नहीं पाता। वहाँ सब के स्वरूप हैं। जैसे जैसे उस मालिक की आज्ञा होती है, उसी प्रकार सब काम होते हैं। जीव विचार करके यह सत्य देखता है और प्रसन्न होता है।*
हे नानक! उस मालिक के रहस्य का कथन करना बड़ा कठिन है।

पूज्य माँ :

बाणी प्राण है करम खण्ड की, अर्शी बाणी वह होये।
वह बाणी है उदासीन की, हर कर्म दिव्य वा होये।।१।।

मन मल जग आवरण गया, मन में जग नाहिं होये।
परम चरण में हृदय बसे, वहाँ 'मैं' की जा ही न होये।।२।।

जब बाणी केवल गुण गाये, हर वाक् प्रभु गुण होये।
और किसी से कुछ भी कहे न, हर बात प्रभु से होये।।३।।

वा के कर्म सब नाम सों रंगी, 'मैं' कारण नहीं होये।
वा जीवन देखे आलम सब, वहाँ अपना मन न होये।।४।।

राम हृदय में वा के ठारे, रोम रोम वा होये।
अपना नाम निज धाम वह भूले, वा बाणी अमर ही होये।।५।।

महाबली निर्भय निर्मोही, नूरानी कर्म वा होये।
राम राम बसें रोम रोम में, निर्लिप्त हर कर्म वा होये।।६।।

सीता भक्ति वा महिमा भये, वा महिमा ही मन होये।
दिव्य भक्ति परम पुरुष की, वहाँ मन में अखण्ड ही होये।।७।।

निरंकार आकार क्या कहिये, अमर अजर वह होये।
जिसके मन में राम विराजें, उसे ठग सके न कोए।।८।।

जो मिले भेजा राम ने, वहाँ राम देन ही होये।
ब्रह्म रूप वह सब को जाने, वहाँ सदा आनन्द ही होये।।९।।

जो सच जाने वह यह जाने, हर रूप उसी का होये।
नाम रूप इक माया नगरी, निरंकार पसारा होये।।१०।।

नाम रूप सब मिट जायेंगे, साँचो प्रभु ही होये।
निरंजन वह नित निरंकार, इक ओंकार सच होये।।११।।

आप रचे फिर आप ही देखे, अखण्ड खण्डित सा होये।
एक आत्म अद्वैत तत्व वह, अखिल रूप वह होये।।१२।।

शब्द परे वह मन परे, वह बुद्धि परे ही होये।
फिर भी रचे वह सब संसारा, पूर्ण आप ही होये।।१३।।

जैसे वह चाहे वैसे वह रच दे, वैसा ही सब होये।
जो देखे जो आप विचारे, विकास उसी का होये।।१४।।

कौन कहे उस आत्म की, वचन परे वह होये।
अचिन्त्य रूप अतीन्द्रिय वह, असीम ससीम जो होये।।१५।।

क्या महिमा गायें उसकी, समझ परे वह होये।
वह मालिक मैं जिसके गुण गाये, उसकी बाणी अस होये।।१६।।

ओ मालिक मेरे बादशाह, कब कर्म ऐसा मोरा होये।
जिसमें 'मैं' का कण न हो, हर कर्म तव नाम ही होये।।१७।।

रोम रोम मेरा ओम् कहे, हर कर्म नाम तेरा ले।
'मैं' का नामोनिशान मिटे, तब तेरा कर्म भये।।१८।।

ऐ नानक मेरे बादशाह, यह मैं नहीं कर सके।
नाम बसे हिय में तेरा, तो राम भी कृपा करें।।१९।।

दर पे बैठ के शरण में आ के, अज मन तुझे यह ही कहे।
ओ मालिक मेरे बादशाह, मुझे अपनी शरण में ले।।२०।।

दिव्य विशुद्ध तू आत्म रूप, आनन्द स्वरूप तू परम रूप।
अखण्ड विज्ञान तू आप प्रभु, आनन्द स्वरूप अखण्ड रूप।।२१।।

नित्य प्रकाश तू आप है मालिक, कुछ ज्योति मुझको दे।
जो ज्ञान तूने आज दिया, वह हृदय में आन बसे।।२२।।

हृदय में कहें गर नाम बसे, तब ही अब हो सके।
पर दयापुंज तू करुणापूर्ण, बिन करुणा के कैसे यह मिले।।२३।।

हे दरियादिल मेरे मालिक तू, इतनी करुणा कर दे।
विशाल हृदय तू भक्त वत्सल, तू भक्ति से मन भर दे।।२४।।

भक्त संरक्षक प्रेम का दरिया, मन प्रेम विभोर कर दे।
तेरे चरण में नित्य रहूँ, निज नाम वहाँ भर दे।।२५।।

बेक़रार दिल अज चरण पड़ा तोरे, रहमत तू कर दे।
नानक ओ मेरे मालिका, इतनी नज़र कर दे।।२६।।

मैं अर्ज़ करूँ तोरे चरण पड़ूँ, इतनी करुणा कर दे।
सोज़ेदिल चरण धर दूँ, वहाँ अपना नाम भर दे।।२७।।

मैं ग़ाफ़िल तेरे नाम से, न जानूँ तेरे धाम को।
कैसे चरण में आ बैठूँ, न जानूँ तेरे नाम को।।२८।।

कुछ तो कर तू आप ही कर, मेरे मन में नाम भर दे।
तू अखिलपति तू अखिल गुणी, इतना ही गुण भर दे।।२९।।

विज्ञानपति तू विश्वपति, जगदेश्वर कृपा कर दे।
तू वाक्पति तू कर्मपति, परमेश्वर नज़र कर दे।।३०।।

वाणी मेरी जस तू कहे, वस तो न हो सके।
पर चंचल मन अधीर मन, थोड़ी तड़प भर दे।।३१।।

साँचो कर्म यह हो जाये, गर नाम तू निज भर दे।
तेरा कछु भी न जाये, मुझे नाम की भिक्षा दे दे।।३२।।

विश्वेश्वर तू परमेश्वर तू, ज्ञानेश्वर कुछ कर दे।
इक बुन्दिया मुझे नाम की दे, मेरा रोम रोम ले ले।।३३।।

गर नाम मिले मुझे तेरा नानक, मेरा अपना नाम न रहे।
रोम रोम जाये तेरा भये, मन तेरा हो जाये।।३४।।

यह मन मेरा अब नहीं रहे, बुद्धि संग छोड़ ही दे।
तेरा सब तेरा भये, मन उज्जवल तब ही भये।।३५।।

ओ नानक मेरे मालिका, तेरे चरण में आज पड़े।
तू शब्द परे की बात कहे, मेरे शब्द ही मौन कर दे।।३६।।

मैं क्या माँगूँ क्या न माँगूँ, तेरी लीला मन देख सके।
पर मेरा मन अब नहीं रहे, तेरा मन तुझे देखे।।३७।।

श्रीमती देवी वासवानी : *वह कैसी वाणी होगी जो कर्म का प्राण बन जायेगी?*

पूज्य माँ : *पहले यह क्यों न सोचें कि वह किसकी वाणी की कह रहे हैं? वह कह रहे हैं जिसके मन में राम हैं, उसकी यह वाणी है; जिसके मन में नानक हैं, उसकी यह वाणी है। जिसकी ख़ुदी, ख़ुदी खोकर भगवान की हो गई, वह ख़ुदाई हो गई, यह उसकी वाणी की बात कह रहे हैं; जहाँ 'मैं' का नामोनिशान न रहे, जहाँ ख़ुदा की रज़ा चले, जहाँ हम केवल उनके चाकर बनते हैं, जो ठाकुर की उपासना करे। हर कर्म की राह, वह वाणी कब होगी - जब 'मैं' नहीं होगी।*

यह transcendental supra-intuitional वाणी की बात कर रहे हैं। यह उस वाणी की बात कह रहे हैं, जिसका दुनियावी reality के साथ सम्बन्ध ही नहीं होता। दुनिया में जो मिले या न मिले, उसकी ओर वह ध्यान ही नहीं धरते। उन्हें बेवफ़ाई मिली, दर्द मिला, या सुख-चैन मिला, इसकी तरफ़ वह ध्यान ही नहीं करते! उन्हें क्या मिला.. यह उन्हें भूल ही गया! यह उसकी वाणी की बात कह रहे हैं।

उसके कर्म कैसे होंगे? उस दीवाने के कर्म केवल अर्शी होंगे, दिव्य होंगे। उसके कर्म तो हमेशा मन्दिरों में चढ़ाये जायेंगे। उसका तो जीवन ही एक लड़ी होगी, जो कि भगवान के चरणों में माला बनकर चढ़ी होगी। उसकी वाणी में 'मैं पन' का कण नहीं होगा। यह उस वाणी वाले की बात कह रहे हैं। उसकी वाणी में तो भगवान बसते हैं। उसकी हर बात बस भगवान को addressed होती है, भगवान को सम्बोधित करके होती है। वह भगवान को हाज़िर नाज़िर करके बात करता है, वहाँ पर 'मैं' की बात नहीं होती, पर वहाँ 'मैं' का लिहाज़ नहीं होता। 'मैं वह करूँ या वह कहूँ जो लोगों को भाता है', वहाँ ऐसी बात नहीं होती। उसके साथी भगवान होते हैं! वह सब कुछ भगवान के साक्षित्व में करता है!

ऐसे लोग जीवन में जाने भी नहीं जाते, पहचाने भी नहीं जाते। वह जाने भी कैसे जायेंगे? न वह किसी को मिलते हैं, न दिखाते हैं किसी को। वह केवल एकान्त में बैठकर केवल भगवान से बातें करते हैं। उनके जीवन साधारण होते हैं, अति साधारण! क्योंकि दूसरे के साथ जाकर वह अपने आपको उसके तद्‌रूप कर देते हैं। वह अद्वैत में, दूसरे के स्तर पर जाकर दूसरे को मिलते हैं, उसी के स्तर पर जाकर जीते हैं। वह लोग, जिनके साथ वह रहते हैं, उनके रूप से जाने जाते हैं, पहचाने जाते हैं। जब वह चले जाते हैं तो उनकी बाणियाँ निकलती हैं। तब उनके कर्म देखे जाते हैं, तब उनके कर्म तोले जाते हैं। तब वह कुछ और बन जाते हैं। यहाँ भगवान उनकी बातें कर रहे हैं, तुम्हारी हमारी बातें नहीं।

श्रीमती देवी वासवानी : *क्या कह सकते हैं कि उनके कर्म expression of the Spirit (आत्मा का प्राक्ट्य) हैं?*

पूज्य माँ : *उनके कर्म सच ही expression of the Spirit होते हैं। एक हैं भगवान! आत्मा कह लो, एक उनकी Spirit (स्वरूप) है, एक उनका रूप है - दैवीगुण। नानक धरती पर भगवान रूप थे! क्यों? राम धरती पर भगवान रूप क्यों थे? क्यों थे, क्यों हैं, क्यों रहेंगे? वे बारम्बार जन्म लेकर आये, इतने नाम रखे, इतने रूप लिये, हर बार उनमें क्या था? वह आत्म तत्व था, एक ओंकार था। वह एक ओंकार, उसकी Spirit उनमें abide करती थी।*

शरीर होते हुए भी वह शरीर नहीं थे। हमारे जैसे दुःख और सुख में से निकलते हुए भी, हमारे जैसे काम करते हुए भी, हमारी तरह रहते हुए भी वह हमारे जैसे नहीं थे। दुःखी-सुखी होते हुए भी वह इन सबसे परे थे। वह आसन पर बैठे हुए लोग नहीं थे; वह इन सब से परे थे। वह तो दुःखघन लोग थे। वह ज्ञानघन, क्षमाघन और प्रेमघन थे। उनकी क्या बात करें!

ओ मौला तेरी क्या कहूँ, तूने जब जन्म लिया।
तू कर्म रूप तू ज्ञान रूप, अखिल रूप तू आप भया।।१।।

ओ मौला तेरी क्या कहूँ ....

तू उदासीन नित्य रहा, निर्विकार तू आप भया।
नित्य तृप्त तू मोह रहित तू, निर्लिप्त तू आप रहा।।२।।

ओ मौला तेरी क्या कहूँ ....

आशा तोपे कोई न थी, आशा रहित तू नित्य रहा।
समचित्त तू संग रहित, भाव रहित तू नित्य रहा।।३।।

ओ मौला तेरी बात कहूँ ....

अगर इनको देखें तो यह बातें सच ही तो हैं!

देहात्म बुद्धि रहित, मैं पन से पूर्ण रहित, ख़ुदी से बेग़ाने, मन से रहित,
प्रेम दीवाने, ज्ञानघन और बातों में ज्ञान रहित!
दिव्य कर्म स्वरूप यह आप, पर दीवाने से ये मन के रहित!
जग ठुकराये, लगाये कलंक, वह क्षमा स्वरूप, मान रहित!
अखिलपति, अखिल रूप यह, पूर्ण आप पर चैन रहित!
चैन नहीं, सुख भी नहीं, पर लीला देखो, दुःख रहित!
आनन्दघन आप, आनन्द रहित! प्रेमघन आप, प्रेम रहित!

ओ मौला तेरी बात क्या, गुण गाऊँ कैसे कहूँ, तुमसे तुझे आज कहूँ!

यह जानकर हम लोग क्या कह सकते हैं? हम तो ऐसे नहीं हैं। कहते तो हैं कि तू हमें यह सब बता! पर यदि हमें यह सब बता दिया, तो कहीं गुमान न आ जाये! इसलिये :

तू यह सब न बता, बस चरणों में रहने दे।
नानक नानक कहने दे।।१।।

तू राम की महिमा गाता है, हम तेरी महिमा गाते हैं।
चरण की धूलि मिल जाये, तुमसे यह चाहते हैं।।२।।

गर हमारी इल्तिजा क़बूल है, तो बस चाहे सब कुछ ले ले, दुःख के भण्डार भर दे, पर :

इक नाम की बुन्दिया मिल जाये, वरना जीवन व्यर्थ गया।
अर्थ ही नहीं रहा जीवन में, अर्थीवत् तन घूम रहा।।३।।

ओ प्राणपति तेरा नाम ही, प्राण का आधार है।
बस नाम तुम्हारा मिल जाये, सुना तू दिलदार है।।४।।

गर समझो मैं अभी पात्र नहीं, तो बेक़रार दिल को करो।
इतना तड़पा दो मालिक मेरे, इक पल चैना मुझे न हो।।५।।

स्वाति बून्द अब मिल जाये, इतनी कृपा अब तुम करो।
दामन फैला के माँगें इनायत, इतनी नज़र भगवान करो।।६।।

क्रमशः

दिव्य जीवन..

दहलीज़ पे माटी पड़ी, माँग में हम भर लें..
माटी वह किसकी थी, इस पर न चित्त धरें!

पूज्य छोटे माँ द्वारा संकलित

परम पूज्य माँ एवं अर्पणा आश्रम के वरिष्ठ सदस्य

श्री हरमन्दिर साहिब - स्वर्ण मन्दिर, अमृतसर.

यह बात उन दिनों की है जब परम पूज्य माँ पंजाब युनिवर्सिटी के 'खेल-कूद विभाग' की निर्देशिका के रूप में कार्यरत थे। उन दिनों पूज्य माँ जालन्धर, 'दिलफ़िज़ा' में रहा करते थे। 'दिलफ़िज़ा', उनका आवासीय बंगला, युनिवर्सिटी की ओर से मिला हुआ था और इसी में ही उनका दफ़्तर भी हुआ करता था।

एक बार उनके दफ़्तर में रामसिंह के नाम से एक ऑडिटर आये हुए थे। दफ़्तर के काम के साथ साथ खाली समय में वह अकसर पूज्य माँ के साथ, अन्य विषयों के

अतिरिक्त राम चर्चा भी किया करते थे। इस प्रकार कभी खाने के समय या चाय के समय जब पूज्य माँ से बातचीत करते तो वह बहुत प्रभावित होते। उनको पूज्य माँ के साथ बातें करना बहुत ही अच्छा लगता था।

एक दिन पूज्य माँ अपने कार्य के संबंध में अमृतसर जा रहे थे। मैं भी उनके साथ ही जा रही थी। वह सज्जन कहने लगे, "चलिए, मैं भी आप के साथ ही चलता हूँ।" इस प्रकार हम तीनों अमृतसर चल पड़े।

वहाँ पर उन्होंने स्वर्ण मन्दिर जाने की इच्छा प्रकट की। हम भी उनके साथ दर्शन करने के लिए गये। श्री हरमन्दिर साहिब में पूज्य माँ तो दहलीज़ पर ही खड़े रहे और वहीं से उन्होंने चरण-रज को सीस पर धारण कर लिया!

मैंने अन्दर जाकर वहाँ पर माथा टेका, प्रसाद लिया और बाहर आकर बड़े गुमान भरे शब्दों में पूज्य माँ से कहा, "मैं तो माथा टेक कर आई हूँ और आप तो यहीं पर ही खड़े रहे। मैंने तो सब कुछ विधिवत् किया है और एक आप हैं, जो किसी भी विधि का अनुसरण नहीं करते।"

पूज्य माँ यह सुन कर मुसकुरा दिये और कहने लगे, "तूने वह किया जो तूझे उचित लगा और मैंने वह किया जो सहज में मुझे ठीक लगा। यह जो दहलीज़ है, इस पर

ऊँच-नीच, छोटे-बड़े, अच्छे और बुरे सभी पाँव रख कर जाते हैं। मैंने भगवान से इतनी ही प्रार्थना करी है कि हे भगवान! मैं आज आपके साक्षित्व में दहलीज़ से चरण-रज लेकर अपने सीस में धरती हूँ। सभी तेरे ही रूप हैं, हर रूप में ही आप मुझे कुछ न कुछ सिखाने आये हैं"

इस प्रकार दोनों ने ही अपने अपने भावों से वहाँ दर्शन किये। भगवान यही कहते हैं कि 'प्रसाद अपने भाव का ही मिलता है'। तो माँ ने जो माँगा वह उसी की ही प्रतिमा हैं! मैंने तो जग माँगा मुझे वही मिल गया..

आज अब से, आज से मैं किसी को भी अच्छा या बुरा अथवा न्यून या श्रेष्ठ नहीं मानूँ। सबको तेरे जान कर, हर रूप में तू ही आया है यह जान कर स्वीकार करूँगी। 'उसको भेजा राम ने मुझे राम ही मिल गया..' यही मानूँगी। मैं यह नही कहूँगी कि मुझे अच्छा या बुरा मिला है बल्कि यही भाव होगा कि हर रूप में राम ही आये हैं।

उस समय तो पूज्य माँ ने ज़्यादा कुछ नहीं कहा, परन्तु जैसा कि अकसर हुआ करता था..

अपने मन्दिर में बैठ कर पूज्य माँ का यह बहाव बह निकला :

राम से विनती करे, तेरा नाम हम न भूलें।
हृदय में तुझे धरी, सब चरणां हम छू लें।।

दहलीज़ पे माटी पड़ी, माँग में हम भर लें।
माटी वह किसकी थी, इस पर न चित्त धरें।।

मन्दिर में जाये संत, माटी से माँग भरें।
गुण अवगुण जग के, वह चित्त में नहीं धरें।।

भिड़ाव की बात मिटे, अपमान भी किसे कहें।
पल पल जो झुकें, भगवान भी साथ रहें।।

यह ही वर माँगों, हृदय में राम रहे।
नित्य मैं झुकी रहे, भाव यह अमर रहें।।

❖ ❖ ❖

..श्रुति जागृत करती है,
बाह्य पाये नहीं परम मिले!

प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा अष्टादशोक्तमवरं येषु कर्म।
एतच्छ्रेयो येऽभिनन्दन्ति मूढा जरामृत्युं ते पुनरेवापि यन्ति।।

- मुण्डकोपनिषद्, प्रथम मुण्डक - द्वितीय खण्ड, ७ श्लोक

शब्दार्थः

निश्चय ही ये यज्ञरूप अठारह नौकाएँ अदृढ़ (अस्थिर) हैं; जिनमें नीची श्रेणी का उपासना रहित सकाम कर्म बताया गया है; जो मूर्ख यही कल्याण का मार्ग है, यों मानकर; इसकी प्रशंसा करते हैं; वे बार बार निःसन्देह वृद्धावस्था और मृत्यु को प्राप्त होते रहते हैं।

तत्व विस्तारः

जग चाहक निकृष्ट चाह, बाह्य जग ही चाहते हैं।
जग की चाहना लिये हुए, नश्वर फल रे पाते हैं।।१।।

विनाशवान ही चाहें वह, विनाशवान ही पाते हैं।
इच्छित भोग्य भोगन् को, जन्म वह निश्चित पाते हैं।।२।।

भोग भोग्य जब हो चुका, पुनः वह मृत्यु पाते हैं।
स्वर्ग लोक सों लौट करी, पृथ्वी लोक में आते हैं।।३।।

जन्म मरण के चक्र सों, वह तो उठ नहीं पाते हैं।
ज्ञान रहित कर्मन् के, आश्रित वह रह जाते हैं।।४।।

अव्यय शान्ति दे नहीं, नित्य सुख भी न पाये।
जन्म मरण के चक्र का, शिथिल गमन न हो पाये।।५।।

पाया और फिर चला गया, ऐसा पाये से क्या पाये।
इक तन सुखदे अनेक सुख, ऐसा सुख पाये क्या पाये।।६।।

अज्ञान बँधा अज्ञान में ही, अज्ञान पूर्ति कर्म करे।
ऐसे कर्म सों साधक रे, ज्ञान नहीं रे प्रदुर भये।।७।।

तन से ही वह भोग करे, तन कारण ही कर्म करे।
सुडौल सुस्थिति भी हो, जरा पाये और फिर मरे।।८।।

मन ही समिधा न बने, चाहना घृत रे न बने।
वृत्ति लकड़ी न बने, ज्ञान अग्न रे न बने।।९।।

बाह्य साधन छोड़ करी, आन्तर में आना ही होगा।
सीमित यज्ञ अनुष्ठान त्यजी, सत्त्व रे पाना ही होगा।।१०।।

घोर शब्द में श्रुति देख, साधक को रे जगाती है।
अज्ञानी बालमति को रे, देख वह समझाती है।।११।।

आपेक्षिक सुख तो सुख नहीं, सुख में दुःख है भरा हुआ।
मिलन जहाँ पे जब हुआ, बिछुड़न संग है खड़ा हुआ।।१२।।

श्रुति ताड़ना करती है, पहले कही करी यज्ञ करो।
अब कहें अरे उठो उठो, यहाँ तलक ही मत रहो।।१३।।

प्रथम स्तर यह साधना का, यह तो तेरा लक्ष्य नहीं।
यहीं तलक गर रह गया, सत्त्व होये प्रत्यक्ष नहीं।।१४।।

बाह्य त्यजी और भूल करी, आन्तर में अब आ जावो।
बाह्य चाह पूर्ण त्यजी, साधना लोक में आ जावो।।१५।।

स्थूल लोक फल त्यजी, ध्यान लोक में आ जावो।
बाह्य प्रज्ञ तनो क्षेत्र त्यजी, भाव लोक में आ जावो।।१६।।

विराट रूप प्रवाह त्यजी, तैजस में अब आ जावो।
विश्व रूप को भी त्यजी, आन्तर लोक में आ जावो।।१७।।

इन्द्रिय लोक अब छोड़ करी, मनो लोक में आ जावो।
विश्व सों नाता तोड़ करी, प्रज्ञा सों तो लगा जावो।।१८।।

समाधि की ओर जाना है, चित्त परम में अब होये।
गर कुछ तुमको चाहना है, राममय तो अब होये।।१९।।

स्थूल अन्नमय त्यजी, विज्ञानमय में आ जावो।
इससों भी फिर उठ करी, आनन्द में समा जावो।।२०।।

जड़ शब्द अब छोड़ दो, भाव भाषा जान लो।
बाह्य जग की चाह तेरी, है पाश तुम जान लो।।२१।।

अरे पक्षी! वह तुझे कहें, वृक्ष फल भोग छोड़ दे।
द्रष्टा पक्षी सखा तेरा, उससों नाता जोड़ दे।।२२।।

बिन वृक्ष फल संग त्यजे, परम सों संग रे नहीं होये।
एक ही है मन तेरा, दो से ही संग न होये।।२३।।

एक को ही तू दे सके, एक को ही तू ध्या सके।
मन मेरे तू जान ले, इक पल एक ही पा सके।।२४।।

बाह्य ध्याये बाह्य मिले, परम ध्याये ही परम मिले।
सम्पूर्ण बाह्य त्यज आये, जो हो तो वह परम मिले।।२५।।

स्वभाव प्रवाह रे बदल ले, चाह प्रवाह रे बदल ले।
रजो गुणी में वास तेरा, अब मुहार रे बदल ले।।२६।।

तैजस ही है रजोगुणी, आन्तर लोक रे जान ले।
मनोलोक यह जीव लोक, ध्यान लोक यह जान ले।।२७।।

भोगी पक्षी यह ही है, जित चाहे वह भोग करे।
फल चाहे वह फल पाये, और तनन् से भोग करे।।२८।।

द्रष्टा से गर संग करे, कारण की यह ओर चले।
द्यू लोक मौन लोक, हृदय लोक की ओर बढ़े।।२९।।

कर्माशय है आन्तरिक लोक, ईश्वर की यह ओर बढ़े।
समाधि लोक वह सत्त्व लोक, आत्म की वह ओर बढ़े।।३०।।

गर उत्तर की ओर चले, दक्षिण दूर ही रह जाये।
हृदय लोक की ओर बढ़े, बाह्य दूर ही रह जाये।।३१।।

सर्वज्ञ वह सर्व परे, सर्वश्रेष्ठ को वह पाये।
अधिष्ठान अजर अमर, नित्य सत्त्व को वह पाये।।३२।।

प्रथम वह राहें कहते हैं, पूर्ण जग यह पाने की।
तृप्ति राह सम्मुख धरी, सुविधा दे उसे पाने की।।३३।।

पर सामने पूर्ण देख करी, स्वर्ग लोक जो छोड़ दे।
आनन्द मनो चाह को जो, देख के सामने छोड़ दे।।३४।।

पूर्ण सुख जिसे जग कहे, उनसे मुखड़ा मोड़ दे।
कुछ पाया है कुछ पा सके, जान के संग वह छोड़ दे।।३५।।

जाने इक वह मन्त्र कहे, वाँछित सामने आयेगा।
बस चाहने की बात है, फल वही वह पायेगा।।३६।।

पर जाने यह मायिक है, आपेक्षिक काल तलक यह रहे।
नित्य नहीं अविनाशी ना, कुछ पल को रे संग रे दे।।३७।।

और जाने वह तत्व परे, परम तत्व जिसे कहते हैं।
पूर्ण जग पा न पाये, परम सत्त्व जिसे कहते हैं।।३८।।

परम चेतन वह सत्त्व रूप, अखण्ड रस जिसे कहते हैं।
मिलन की चाहना अब लगी, अद्वैत तत्व जिसे कहते हैं।।३९।।

जान के चाहना छोड़ दे, मिथ्या लग्न वह छोड़ दे।
पाकर पूर्ण ऐश्वर्य, भोग की चाहना छोड़ दे।।४०।।

कुछ पा लिया कुछ पा सके, जान के अब वह छोड़ दे।
क्षणिक क्षण भंगुर जानी, जानी नाता तोड़ दे।।४१।।

या कह दो वह जान गया, यह सुख अब वह न चाहे।
परम तत्व वह राम मेरा, राम तत्व को ही चाहे।।४२।।

वह निरासक्त वैरागी वह, पर अनुरागी हो गया।
क्षणिक सों लो मन उठा, परम अनुरागी हो गया।।४३।।

मायिक जग ना भरमाये, माया से उठना चाहे।
पूर्ण तृप्त वह हो चुके, माया दासी बन जाये।।४४।।

वह कहे अरे कुछ तो चाहो, आवो आवो तुम आ जावो।
इक बेरी कुछ नाम तो लो, वह ही पल में पा जावो।।४५।।

यह कहे नहीं अब नहीं नहीं, यह कहे निरपेक्ष भये।
सुख दुःख माया जो भी दे, उदासीन निर् चाह भये।।४६।।

निरासक्त निर्मोही, संन्यासी उसे जग कहे।
वा मन में अब परम का, जान ले एको भाव रहे।।४७।।

वेद ध्ययन से जान गये, जो चाहे किस विध मिले।
कल्याण पथ यह नहीं नहीं, पूछे परम किस विध मिले।।४८।।

मूढ़मति जो देख कहें, बाह्य जग में भरमाये।
बार बार जन्मे मरे, तनो संग वह पा जाये।।४९।।

जन्म दुःख फिर व्याधि दुःख, फिर जरा दुःख भी आ जाये।
भोग्य भोग के ख़त्म हुये, फिर मरण दुःख भी आ जाये।।५०।।

इन्हें ध्याये तो यही मिले, परम ध्याये तो परम मिले।
श्रुति जागृत करती है, बाह्य पाये नहीं परम मिले।।५१।।

राम तत्व को पाना है, अखण्ड में समाना है।
अनित्य को तू छोड़ दे, नित्य को गर पाना है।।५२।।

बस राम राम तुम राम कहो, नाम मग्न ही रहा करो।
मन्त्र ज्ञान अरे यह जहान, छोड़ के राम ही कहा करो।।५३।।

२८-८-६१

'सत् का अभाव नहीं होता और असत् का भाव नहीं होता..'

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः।।

श्रीमद्भगवद्गीता २/१६

यहाँ पर भगवान कहते हैं कि :

शब्दार्थः

१. असत् का तो भाव नहीं होता,
२. और सत् का अभाव नहीं होता,
३. इन दोनों का भी अन्तर
४. तत्वदर्शियों द्वारा देखा गया है।

तत्व विस्तार :

भगवान कहते हैं कि असत् का भाव नहीं होता।

'असत्' वह है :

१. जिसका अस्तित्व न हो;
२. जो सत्ताहीन हो;
३. जो अनुचित हो;
४. जो दुष्ट या पापी हो;
५. जो तमोगुण या रजोगुण प्रधान हो;
६. जो मिथ्यात्व पर आधारित हो;
७. जो मिथ्या सिद्धान्तों पर आधारित हो;
८. जो सत्ता रहित हो, पर वास्तविक सा भासता हो;
९. जो नित्य नहीं रहता;
१०.जिसका प्रभाव निरर्थक हो।

देख नन्हीं! सुख, दुःख, तनत्व भाव, अहंकार, काम, क्रोध, भीरुता, लोभ इत्यादि मनोविकार, 'मम' 'मेरा' कहना, अपनी बुद्धि और गुणों पर गुमान और अपनी न्यूनता छिपाने के लिये चित्त में जो ग्रन्थियाँ बन जाती हैं, ये सब असत् पर आधारित हैं।

मान्यतायें, प्रभाव, संकल्प इत्यादि मनोग्रन्थियाँ सब ही असत् हैं, क्योंकि यह सब जीव के अपने ही मन के द्वन्द्वपूर्ण

विकारों पर आश्रित हैं। जीवन में असत्, सतोगुण विरोधी रजोगुण तथा तमोगुण का वर्धन करता है। यानि लोभ तथा कामना, अज्ञान तथा मोह, आसुरी सम्पदा, अहंकार, दम्भ, दर्प और क्रोध इत्यादि का वर्धन करता है।

अब '**सत्**' को समझ ले :

सत् जानने के लिये असत् के सम्पूर्ण शब्दों का इस्तेमाल कर लो, तो समझ आ जायेगा कि असत् से उलटा सत् है। फिर भी नन्हीं! सत् को यूँ समझ लो कि :

क) जो वस्तुतः विद्यमान है, वह सत् है।
ख) यानि वास्तविकता सत् है।
ग) परम का ज्ञान सत् है।
घ) सत् उसे कहते हैं जो नित्य भी हो, श्रेष्ठ भी हो और उचित भी हो।
ङ) जो नित्य सिद्धान्तों पर आधारित हो, उसे सत् कहते हैं।
च) यथार्थता को सत् कहते हैं।
छ) सतोगुण प्रधान को सत् कहते हैं।

देख नन्हीं! सतपूर्ण लोग :

क) ज्ञानवान तथा विद्वान् होते हैं।
ख) मनोप्रधान नहीं होते बल्कि बुद्धि प्रधान होते हैं।
ग) विशिष्ट आचरण पूर्ण होते हैं।
घ) कर्तव्यपरायण होते हैं।
ङ) निष्काम भाव से लोगों का कार्य करना ही अपना धर्म मानते हैं।
च) सब लोगों के हितकर कार्य करते हैं।

इनके जीवन में दैवी गुणों की प्रधानता होती है। क्योंकि वे लोग सत्-परायण होते हैं इसलिये वे जीवन में सत्गुणों का ही प्रयोग करते हैं। इन्हें गुणों का ज्ञान और प्रकाश तथा सतोगुण से संग होता है।

भगवान कहते हैं कि '**सत् का अभाव नहीं होता और असत् का भाव नहीं होता।**' अब भाव का अर्थ समझ ले।

भाव का अर्थ है:

अस्तित्व, अभिप्राय या स्पष्ट अर्थ, यथार्थता, निहित तत्व सार, अवस्था, स्थिति या असलियत तथा सहज लग्न।

भगवान कहते हैं असत् का तो भाव ही नहीं होता; असत् की कोई कीमत नहीं होती। असत् तो अवास्तविकता पर आधारित है। इसलिये जहान में उसका वास्तविक मूल्य तथा लाभ कुछ भी नहीं होगा। असत् तो असत् ही है, उसका अभाव निश्चित ही है। असत्मय व्यवहार सत्य नहीं होता, यानि नित्य आदरणीय तथा यथार्थ नहीं होता। इसके विपरीत सत्पूर्ण व्यवहार नित्य ही मान, प्रतिष्ठा तथा श्रेष्ठता को उत्पन्न और उसका वर्धन करने वाला होता है।

अब आगे ध्यान से समझ नन्हीं! भगवान कहते हैं इन दोनों का भी अन्तर तत्वदर्शियों द्वारा देखा गया है।

१. आत्मा सत् और असत् से परे है।
२. प्रज्ञावान सत् और असत् से नित्य अप्रभावित रहते हैं।
३. परम को जानने के लिये विद्या और अविद्या, दोनों का विवेक ज़रूरी है।
४. गुणातीत होने के लिये सत्त्व, रज तथा तमोगुण से नित्य अप्रभावित रहना अनिवार्य है।
५. ज्ञानवान पण्डितगण आत्मवान होते हैं। वे तन के किसी भी गुण से प्रभावित नहीं होते।
६. आत्मवान पण्डितगण तनत्व भाव से परे होते हैं; उन्होंने सत् और असत् के अन्तर को देखा है।

नन्हीं! सत् भी एक गुण है और असत् भी एक गुण है। ये गुण जीव तन नाते अपनाता है और ये गुण तन राही ही बहते हैं। जो जीव तन को अपनाता ही नहीं, उसके लिये सत् और असत् कोई

महत्व ही नहीं रखते।

अब आगे समझ, अब तनिक सूक्ष्म बात समझाते हैं। जब तक जीव तन को अपनाता है, वह तन के गुणों को भी अपनाता है और तन के ही किसी काज अर्थ तन का नौकर बना रहता है। तन को स्थापित करने के लिये जीव सारा जीवन लगा देता है। तन की रुचि पूरी करने के लिये वह जीवन भर क्या कुछ नहीं करता? किन्तु जब वह अपने आपको तन मानता ही नहीं, और 'मैं तन नहीं हूँ' इसमें पूर्ण परिपक्वता पा जाता है, तो वह तन को भूल ही जाता है। अपनी विस्मृति ही, आत्मवान की स्थिति है। तब तो जो सामने आ जाये, वह उसके तद्‌रूप हो जाता है। उसको समझना अतीव कठिन हो जाता है, क्योंकि उसका हर काज कर्म उसके सहवासियों तथा सहयोगियों पर आश्रित होता है और उसके सम्पर्क में आने वालों की मानसिक तथा जीवन की व्यवस्था पर आधारित होता है। ऐसा आत्मवानः

१. न साधुओं वाले वस्त्र पहनता है।
२. न किसी गुण से बँधा होता है।
३. न ही किसी कार्य प्रणाली या प्रक्रिया से बँधा होता है।
४. न ही वह प्रवृत्ति से आसक्त होता है।
५. न ही निवृत्ति से आसक्त होता है।
६. कोई भी काम उसके लिये श्रेष्ठ नहीं होता।
७. कोई भी काम उसके लिये न्यून नहीं होता।
८. वह करुणापूर्ण, क्षमा की मूर्ति होता है।
९. उसका ज्ञान भी शास्त्रों पर आधारित नहीं होता। परन्तु उसका जीवन मानो शास्त्रों की सप्राण व्याख्या है।
१०. देखने में उसके व्यक्तिगत कर्मों पर साधुओं को ही संशय हो जाता है क्योंकि वह किसी भी साधुता की कार्यबद्ध पद्धति का अनुसरण नहीं करता। वह तो जिस वातावरण में रहता है, उसी वातावरण के लोगों की मान्यताओं का भंजन न करते हुए, उन लोगों से काज करवाते हुए उन लोगों का ही कल्याण करता है।

अर्जुन को भी तो भगवान युद्ध करने के लिये कह रहे हैं।

ऐसे लोग, या कह लो, ऐसे तत्व को जानने वाले पण्डितगण सत् और असत् से परे होते हैं।

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित् कर्तुमर्हति।।१७।।

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता २/१७

असत् और सत् में भेद बता कर अब भगवान अविनाशी आत्म तत्व की बात कहते हैं:

शब्दार्थः

१. **और अविनाशी तो तू उसको जान,**
२. **जिससे यह सम्पूर्ण व्याप्त है।**
३. **उस न घटने वाले तत्व का**
४. **विनाश कोई भी नहीं कर सकता।**

तत्व विस्तारः

अब भगवान आत्म तत्व की बात समझाते हैं कि वह अविनाशी है, वह अव्यय तत्व है, जिसका कभी नाश नहीं होता। जो नित्य शाश्वत् तथा अक्षर है, जो अक्षय सनातन तत्व है, वह आत्म तत्व अव्यय है।

अव्यय, यानिः

१. जो अपरिवर्तनशील हो,

२. जो नित्य अखण्ड रहे,
३. जो न कम हो सके, न कभी बढ़ सके।
४. जो ख़र्च न किया जा सके।

आत्म तत्व अविनाशी तथा अव्यय है और सम्पूर्ण जगत उसी से व्याप्त है यानि :

क) संसार के सम्पूर्ण नाम तथा रूप उसी में तथा उसी से व्याप्त हैं।
ख) यह सब, वह अविनाशी तत्व आप ही है और उसके सिवा अन्य कुछ भी नहीं।
ग) यह सम्पूर्ण नाम रूप धर कर भी वह पूर्ण ही रहता है और उसमें कोई कमी या अधिकता नहीं आती।
घ) पूर्ण सृष्टि का आधार वह आत्म तत्व आप ही है।
ङ) पूर्ण सृष्टि में सर्वव्यापी वह आत्म तत्व आप ही है।
च) स्थूल, सूक्ष्म या कारण रूप वह आत्म तत्व आप ही है।
छ) भई! इस संसार में जो कुछ भी होता है, उसी में होता है, उसी से होता है।
ज) जन्म मृत्यु भी उसी में और उसी से होते हैं।
झ) वह तो अखण्ड है।

नन्हीं! यह सब कह कर भगवान समझा रहे हैं कि :

१. यह व्यक्तिगतता का अहंकार जो जीव में आ गया है, व्यर्थ है।
२. जन्म या मृत्यु का भय निरर्थक है।
३. सत् से भी संग नहीं होना चाहिये।
४. असत् तो मिथ्या है ही, उसका त्याग तो अर्जुन तथा पाण्डवगण पहले ही कर आये थे।
५. जीव को अपनी साधुता का भी गुमान हो जाये तो ठीक नहीं। उसे अपनी किसी गुण प्रणाली से संग नहीं होना चाहिये। उसे अपने प्रति नितान्त उदासीन हो जाना चाहिये, क्योंकि वह आत्मा है। जीव अपने आपको नश्वर तन से नाहक बाँध लेता है। तन तो आनी जानी चीज़ है, इससे संग कैसा? तो फिर इसकी मृत्यु से भय कैसा?

देख नन्हीं! भगवान अर्जुन को युद्ध करने के लिये कह रहे हैं और उसकी व्याकुलता को हरने का यत्न कर रहे हैं। भगवान अर्जुन के इन्द्रिय शुष्क कर, शोक की निवृत्ति करने के यत्न कर रहे हैं।

अर्जुन अपने नाते तथा बन्धुओं को देख कर घबरा गये थे। उन्हें वह मारना नहीं चाहते थे। धर्म-युद्ध कह कर मानो भगवान ने कहा कि कौरवगण तो असत् पर चल रहे हैं, पाण्डवगण सत् का अनुसरण कर रहे हैं। सत् और असत् का युद्ध होना ही चाहिये, ताकि पुनः सत् स्थापित हो सके।

क) इसलिये सत् अनुयायियों को भी युद्ध करना ही पड़ेगा।
ख) असत् अनुयायियों को मारना ही पड़ेगा।
ग) जीवन भर की मान्यता को छोड़ना पड़ेगा। चाहे सामने अपने ही मित्र या बन्धु खड़े हों, उनको भी मारना ही पड़ेगा।

जब सत् स्थित लोगों में और असत्वर्ती दुराचारियों में युद्ध होता है, तब इसे धर्म-युद्ध कहते हैं। यह युद्ध तो :

क) देवताओं और असुरों में आरम्भ हुआ था।
ख) संन्यासी और कामनापूर्ण लोगों में हुआ था।
ग) धर्म-परायण तथा अधर्म फैलाने वाले लोगों में हुआ था।
घ) भागवद् गुणों से प्रेम करने वालों और दुराचारियों में हुआ था।
ङ) सर्वहितकर लोगों में और केवल निज

चाहना पूर्ति करने वालों में हुआ था।

च) आज भी यह युद्ध देवताओं और असुरों में हो रहा है।

देवतागण जब तक रण में नहीं उतरेंगे, तब तक असुरत्व कैसे ख़त्म होगा? भगवान यही समझा रहे हैं कि यह युद्ध अनिवार्य है। देवता गण तथा साधु संन्यासी लोगों को अपने सद्‌गुणों से संग नहीं करना चाहिये। उन्हें ऐसे युद्ध का बीड़ा उठाना ही होगा। यही साधुओं का धर्म है। इसी में वास्तविक लोक कल्याण है! इसी में वास्तविक परम सत् की भक्ति निहित है! असहाय तथा निर्बल लोगों की सहायता करना साधुओं का धर्म है। पीड़ित लोगों की पीड़ा हरना साधु का धर्म है। मन्दिर में बैठ कर लाख भगवान के गुण गाइये, उससे अन्यायी के अत्याचार ख़त्म नहीं होंगे। वह ज्ञान का प्रवचन किस काम का, जो अखिल भूतों का दुःख विमोचक न बन जाये?

यहाँ पर भगवान संन्यास का व्यावहारिक स्तर पर आचरण पथ समझा रहे हैं और आत्मा की बातें कर रहे हैं।

१. भगवान, एक महा ज्ञानवान तथा महात्मा, धर्मात्मा कुल सदस्य अर्जुन को यह परम ज्ञान समझा रहे हैं।
२. अर्जुन का कुल दैवी सम्पदा पूर्ण कुल था जो नित्य सत् धर्म का अनुष्ठान करता रहा था। परन्तु उस कुल का सत् गुण से संग हो गया था।
३. जिस कुल वाले दूसरों को कष्ट देना पसन्द नहीं करते थे और वह महान तथा भीषण अत्याचार सहने के आदी थे, भगवान उन पाण्डवों को सत् असत् से परे अविनाशी तत्त्व के विषय में समझा कर, उन्हें युद्ध में नियोजित करना चाह रहे हैं।

जो ज्ञान अर्जुन को पहले ही आता था, भगवान वह नहीं कह रहे। वह तो सत् ज्ञान था, उसकी सहायता से मानो, वह तमोगुण तथा रजोगुण को जीत कर सतोगुण में स्थित हुए थे। अब भगवान अर्जुन को गुणातीतता की ओर ले जाने के यत्न कर रहे हैं।

लोगों के गुणों के प्रति तो वह पहले ही उदासीन थे, अब भगवान उन्हें उनके अपने गुणों के प्रति भी उदासीन बना रहे हैं; क्योंकि, यदि सतोगुण से संग रहा तो वह युद्ध नहीं कर सकेंगे और आत्म उन्नति भी नहीं कर पायेंगे।

इस कारण भगवान अर्जुन को आत्म तत्व की अनश्वरता का राज़ सुझा रहे हैं और कहते हैं कि :

१. आत्मा अमर है।
२. सत् और असत् दोनों का अन्त हो जाता है।
३. आत्मा का कोई नाश नहीं कर सकता।
४. तू इन देहों से संग मत कर और अपना कर्तव्य कर।
५. तू अपने और दूसरे के देह से संग मत कर और परम के गुणों के प्रति अपना कर्तव्य निभा।
६. गुरु हो या पितामह, जब वह अत्याचारियों का साथ देते हैं तो वह भी असुर ही हैं।
७. असुरत्व के पास झुक जाना दैवी गुण को शोभा नहीं देता।
८. असुरत्व मिटाव ही देवत्व का धर्म है।
९. पीड़ित लोगों का संरक्षण ही साधु का कर्तव्य है।

सो, हे पुरुष श्रेष्ठ! उठ! और युद्ध कर। यही तुम्हारा कर्तव्य है और यही तुम्हारा केवलमात्र धर्म है। इसी में भागवद् प्रेम निहित है। ❖

जीवात्मा बलवान है

पिता जी

सुना है कि जीवात्मा बड़ी बलवान है, परन्तु हम देखते हैं कि हमारे व्यवहार मन, बुद्धि और प्रकृति द्वारा हो रहे हैं। जिसे आत्मा कहते हैं वह केवल चेतना ही है और उसमें कोई शक्ति नहीं। यह जो कहना है कि मन से जीवात्मा बड़ी बलवान है, यह समझ नहीं आई!

सारांश

देखने में जीव बलवान सा भासित होता है। जीव के पास कर्म बीज उत्पन्न करने की शक्ति है, इसलिये वह महा बलवान सा दीखता है। ब्रह्म अंश आत्मा, जो रेखा तथा विधान का निर्माण करता है, वह मौन रहने पर भी जीवात्मा से कहीं अधिक बलवान है। जीवात्मा में शक्ति ब्रह्म की है, परन्तु अज्ञानता के कारण वह उसे व्यक्तिगत 'मैं' की शक्ति समझने लगता है।

प्रश्न अर्पण

जीवात्मा है बलवान राम, हम यह सुनते आये हैं।
फिर कहें मन बुद्धि कर्म, स्वतः ही होते आये हैं।।१।।

जीवात्मा केवल चेतना, उसमें शक्ति कोई नहीं।
जीवात्मा बलवान कहो, समझ में आये बात नहीं।।२।।

तत्व ज्ञान

जीवत्व भाव तू प्रथम समझ, पूर्ण जग रच लेता है।
मन बुद्धि राही कह लो, संग वह जब कर लेता है।।३।।

पूर्ण खिलवाड़ जो देखे है, सामने जो तेरे आये है।
जीवत्व भाव ने है रचा, जो वह रूप धर आये है।।४।।

'मैं' ही तो अब मोह घड़े, अँधियारा यह बढ़ाये है।
निज कर्म जहाँ है नहीं, कर्ता वहीं बन जाये है।।५।।

अवास्तविक को वास्तविक कहे, सत् में असत् यह मढ़े।
असत् में सत् आभास करे, दुःख सुख यह भोगा करे।।६।।

व्यर्थ चेष्टा किया करे, फिर निज को वह प्रवीण कहे।
महाबली इसको माने, पूर्ण रचना यह ही करे।।७।।

पर आत्म उससे श्रेष्ठ कहें, अंश जो परम का कहते हैं।
सत् का अंश यह आत्म है, परम का वंश यह कहते हैं।।८।।

जीव स्वरूप आधुनिक जो, 'मैं' संग मोह पूर्ण है वो।
कर्म चक्र भी चल न सके, आत्म गर संग में न हो।।९।।

चेतन प्रभु आत्म अंश, वह ब्रह्म अंश की बात है।
शक्तिघन वह इन्द्रिय रहित, ऐसे की वह बात है।।१०।।

आत्म अंश है सत्त्व अंश, सत् सम्पूर्ण जग रचे।
कर्मन् में सत् प्राण भरे, तब ही बीज वह फूट सके।।११।।

आत्म अंश ही जान मना, जिसे सत् माने जहाँ प्राण भरे।
जीवन में जो सत् माने, वह ही बीज में प्राण भरे।।१२।।

मौन ब्रह्म वह कुछ न कहें, जीव संग ही सब करें।
जीव हाथ में सब कुछ है, बलवान इसको ही तो कहें।।१३।।

जीवत्व भाव बनाये बीज, आत्म तत्व वहाँ प्राण भरे।
परम सत् आत्म बिना, कर्म चक्र नहीं चल सके।।१४।।

जीवन में भगवान कहें, आधुनिक कुछ न बदल सके।
आगामी करें निर्माण कहो, मन बुद्धि राह जहाँ संग भरे।।१५।।

पूर्ण की पूर्णता में, पूर्ण ही सब स्वतः करे।
राम विधान में कह लो, राम सब कुछ आप करे।।१६।।

ब्रह्म को हम बलवान कहें, या वा प्रकृति बलवान कहें।
या ब्रह्म प्रकृति कार्य रूप, कृत जीव बलवान कहें।।१७।।

कृति स्थूल होने कारण, स्वाधीन वा पृथक् ही दर्शाये।
निजी मूल ब्रह्म प्रकृति, भूले तब अहम् उठी आये।।१८।।

कृष्ण स्वरूप कृष्ण जीवन, परिणाम गीता जानिये।
पृथक् करी जग देखे हो, एक रूप करी जानिये।।१९।।

गीता जी बहला तो सके, क्षणिक सुख तो आ सके।
गर कृष्ण के कोण से नहीं पढ़ें, स्वरूप नहीं तब पा सकें।।२०।।

कृष्ण तत्व कृष्ण जीवन, सारांश प्रतिमा गीता है।
मूल तत्व जीवन सत्ता, वा सहज स्वभाव गीता है।।२१।।

वा तत्व भाव जीवन स्वभाव, परिणाम रूप यह गीता है।
त्रै को एक रूप करो, स्वरूप दे यह गीता है।।२२।।

ब्रह्म प्रकृति रचयिता जो, जब जीव उन्हें भुलाता है।
मोहपूर्ण विभ्रांतमनी, तब ही वह हो जाता है।।२३।।

ज्यों गीता पृथक् दर्शाती है, पर कृष्ण बिना निष्प्राण रहे।
त्यों ब्रह्म प्रकृति बिना, जड़वत् जीव भ्रम में ही रहे।।२४।।

जीव ब्रह्मत्व पा सके, जीव असुर भी बन सके।
वहाँ तम भी है प्रकृति भी है, बीज न्यून ही देख घड़े।।२५।।

ज्ञान-विज्ञान सहित

जीवात्मा जब कहें, वह जीव कोण से कहते हैं।
दूजी ओर कहें आत्मा, वह सत्त्व की ओर से कहते हैं।।२६।।

जीव की ओर से जब कहें, संकेत अहं का होता है।
अहं ही जानो चेतन से, चेतन सा भासित होता है।।२७।।

सूक्ष्म बात है समझ मना, जीव अहं की बात कहें।
यह पूर्ण चेतन नहीं होये, आरोपित है आज कहें।।२८।।

ज्यों न्यून कोई जीव हो, श्रेष्ठ सा दिख जाता है।
जितना न्यून हो उतना ही, वह श्रेष्ठ कहलाना चाहता है।।२९।।

अपने को आवृत करी, निज गुण भूल वह जाता है।
अपना आप छुपाये करी, श्रेष्ठ दिखाये जाता है।।३०।।

बहु बलवान दर्शाये करी, निर्बलता निज छुपायेगा।
लाख छुपाये सत्य को, वह तो छुप नहीं पायेगा।।३१।।

इसी विधि कहें जीवात्म, न्यून है इसको जान लो।
मन बुद्धि तन मिलन से, महाबली भये पहचान लो।।३२।।

यह त्रै मिलन संयोग से, जो अहं उठी जाता है।
निज को चेतन सत्य ही, अहं यह माने जाता है।।३३।।

जीवात्म जिसको यहाँ कहें, वहाँ जीव भी है आत्म भी है।
वह राज्य कस छोड़ेगा, समझे वह ही सब कुछ है।।३४।।

जीवात्मा व्यक्तिगत है, समष्टि की वह बात नहीं।
इक जीवन की बात है, पूर्ण की वह बात नहीं।।३५।।

जीव का बल देख तो ले, बुद्धि बल वहाँ मनोबल है।
अहंकार वा का बल है, कर्तृत्व भाव वा का बल है।।३६।।

कर्तापन मिथ्यात्व है, अहंकार भी मिथ्या है।
महाबली वह तब तक है, असत् में जब लौ रहता है।।३७।।

जीवत्व भाव ही नहीं रहे, वह भासित आत्म नहीं रहे।
तन मन बुद्धि का बल तब, कण भर भी कहीं नहीं रहे।।३८।।

आत्म है वा परम अंश, बल स्वरूप वह आप है।
रचयिता और नियमन कर्ता, सत् स्वरूप वह आप है।।३९।।

जीवत्व भाव ही विधान, और निज रेखा से टकराये।
व्यक्तिगत वह हो करके, महा निर्बल ही हो जाये।।४०।।

नव बीज बनाये जाता है, इतना बल उसमें कह लो।
रेखा तनिक न बदल सके, इस कोण से निर्बल तुम कह लो।।४१।।

आत्म परिवर्तन न चाहे, जीवत्व भाव ही चाहे है।
हक़ीक़त से जब टकराये, नव बीज बन जाये है।।४२।।

परिवर्तन चाह तो बुरी नहीं, दक्ष धीर होई आगे बढ़ो।
परिणाम में जो भी तुझे मिले, हँस के उसे स्वीकार करो।।४३।।

दुःखी सुखी जो निज को करो, वह निर्बल तुझको कर दे।
उचित अनुचित बीज बना, निर्माण नव जीवन कर दे।।४४।।

लो आत्म की बात कहें, शुद्ध ब्रह्म अंश है जो।
निर्बल सा वह दर्शाये, महाबली पर वह ही हो।।४५।।

पूर्ण जो हो आप करे, पर कर्तापन वहाँ मौन है।
हर निर्णय वह आप ले, पर निर्णय चा का मौन है।।४६।।

पर बलवान उसे कह सको, ऐसी कोई बात नहीं।
जीव कोण से वा बल का, दर्शन में हो आभास नहीं।।४७।।

रेखा निर्माण हो चुका, कौन उसे तब रोक सके।
विवशता जीव अनुभव तो करे, फिर भी 'मैं' वा नहीं झुके।।४८।।

मन बुद्धि जीवात्म के, दो ही तो सहयोगी हैं।
महाबली निज को मानें, बन जायें यह भोगी हैं।।४९।।

भोग यह अपना ही करें, भोग के दुःखी भी होते हैं।
अपनी रेखा भोग करी, निर्बल ख़ुद को कर देते हैं।।५०।।

संग ही भोगी होता है, निःसंगता योगी का गुण है।
आत्म स्थित ही योगी है, जीवत्व भोगी का गुण है।।५१।।

भोगी आश्रित रेखा के, योगी मानो राज्य करे।
पर आश्रित सोच लो, बलवान कैसे हो सके।।५२।।

आत्म का बल मौन है, बली मौन को कौन कहे।
कर्तृत्व नहीं भोक्तृत्व नहीं, बलवान उसे कौन कहे।।५३।।

महा बलवान मौन है, संग अभाव मौन है।
अहं अभाव मौन है, परम स्वरूप मौन है।।५४।।

जीवात्म की अब कहें, बुद्धि के बल पे नाज़ करे।
स्थित बुद्धि हुई नहीं, न ही सब कुछ समझ चुके।।५५।।

महाबली मन को माने, दैवी गुण एको नहीं।
राग द्वेष का बल है वहाँ, समझे इसको झूठो नहीं।।५६।।

प्रभावित गुण से होता है, हों अपने गुण या दूजे के।
विवश गुण खेंचे जाते हैं, पर महाबली निज को कहे।।५७।।

जो मिलना है मिल जाता है, कर्ता बनी के इतराये।
सत् सार जो समझे न, अज्ञान बलवान बन जाये।।५८।।

(सत्संग शास्त्र)

२५.११.१९६६

मेरी 'मैं' को निर्-आवरण करते हुये,
मेरी सूरत और सीरत के दर्शन कराने लगे!

श्रीमती पम्मी महता

हे श्री हरि माँ! चरण वन्दना कोटि कोटि आपके श्री चरणन् में करते हुये! आज जो कभी पन्नों पर उकेरा था, उसी की याद को दोहराते हुये अपनी कृतज्ञता पेश कर रही हूँ.. क्योंकि हर हाल में आप मेरे साथ ही तो थे.. आपने एक बार हाथ क्या पकड़ा, फिर यह हाथ छोड़ा ही नहीं कभी!

आप स्वयं साक्षी भी हैं और प्रत्यक्ष प्रमाण भी हैं। इसके लिये हे श्री हरि जगद्जननी माँ, तहेदिल से अपनी कृतज्ञता पेश कर रही हूँ। जानती हूँ, मैं किस क़दर नादान व निमानी थी। आप ही की कृपा व आशीर्वाद से अपने आप से मुलाकात कर पाई।

आप ही से आपके नाम का प्रसाद इस हृदय को आप ही ने कितनी तन्मयता से इस हृदय आँचल में डालना क्या शुरु किया, फिर आप के हाथ रुके ही नहीं। आपका स्नेहासक्त हृदय कभी भी मुझसे विमुख नहीं हुआ! क्योंकर.. इसमें अपना मन कैसे रला सकती हूँ, क्योंकि आपने इस हृदय में ऐसी तमन्ना जगाई ही नहीं। इस क़दर दिव्य प्रसाद से आप मुझे नवाज़ रहे थे, मैं तो अनुगृहीत होती चली गई और हर पल, हर क्षण होती आ रही हूँ।

हे दिव्य विभूति पाद, कनीज़ का शतः शतः प्रणाम स्वीकार कीजिये! सच, कैसी अल्पबुद्धि थी मैं.. समझती थी आप से बहुत प्यार करती हूँ, मगर उसकी तो तस्वीर ही बदल गई जब जानी यह प्यार नहीं, मोह है! आपने बताया, "अपने लिये कुछ भी चाहना मोह होता है।" चाहरहित चाह को, जो आपने इसके मन में डाला तो पता चला कि 'यह प्यार नहीं, मोह होता है।'

कैसे कैसे भरम पाल रखे थे आन्तर में.. इस सत्यता से अवगत कराते हुये, आपने मुझे परम सत्य की पूँजी सौंप दी जो आप ही की धरोहर थी.. या कहूँ उसी अपनी पूँजी से मुझे नवाज़ना शुरु किया और निरन्तर करते ही चले गए.. जो प्रेम और मोह का भेद जान पाऊँ!

कैसी अद्‌भुत व विलक्षण धरोहर है आपकी, बड़ी ही हैरतज़दा हो कर देखती ही चली जाती.. आंतर में जिज्ञासु के भाव जगने लगे! यह आपका प्रेम प्रसाद था जिसे पाये करी अघाती नहीं थी!

आगे से आगे आपको और देखने की चाहत रंग लाती गई और आप श्री हरि माँ की असीम करुण-कृपा होती गई। परम पूज्य छोटे माँ ने भी कोई कोर कसर नहीं छोड़ी.. आगे से आगे ले जाते ही चले गए। आप दोनों का माँ, कोटि कोटि धन्यवाद!

आख़िर खोटा सिक्का कब तक चलता.. फिर आपको पाने के बाद तो आप ने कोई ऐसी इच्छा उठने ही नहीं दी.. क्योंकि इसको cash करने का अर्थ होता, आपको deny कर रही हूँ। यह मैं भी नहीं गवारा कर रही थी और न ही आप मेरी तरफ से मुखड़ा मोड़ रहीं थीं।

आपने जो राह दी थी मुझे, उसी पे चलना था मुझे.. तभी तो आगे से आगे आपको देखने की ललक थी! मैं आप से दूर हो कर जीना नहीं चाहती थी, इसीलिए तो आपने मुझे थाम लिया और अपनी राह पर मेरी मुहार मोड़ ली। यहीं से आपने मेरी और आपकी दास्ताँ का, कृपा करी, आग़ाज़ कर दिया..

आप एक एक करके मेरी 'मैं' के आवरण उठाते ही चले गये। कैसे मेरे ही सामने मेरी 'मैं' को निर्-आवरण करते हुये आगे से आगे मेरी सूरत और सीरत के दर्शन कराने लगे। कहाँ कहाँ भूल हुई.. कैसे कैसे आप से दूर होती चली गई.. हे करुणामयी माँ, आप मेरे से ही मुझे अवगत कराती गईं। सच पूछिये! तो यहीं से मेरी आपके संग दास्ताँ का आग़ाज़ हो गया।

मेरी भूलों का कच्चा चिट्ठा इस क़दर खोलने लगे आप कि मेरी मुलाकात मुझ से ही हो जाये.. जो 'मैं' और आप के बीच कोई भरम का परदा रह ही न पाये! एक स्वच्छ व निर्मल तथा पावन हृदय लिए अपने आपके सामने इस क़दर खड़ी हो पाऊँ कि शर्मसार न हो कर, जो 'मैं' आपका अपना आप हूँ, उस परम पुनीत पावनता में खड़ी हो जाऊँ.. जहाँ कोई 'मैं' का अंश रह ही नहीं जाता।

किस पावनता से मुलाकात हुई कि आप ही के बहाव में बहती ही चली गई। आपने मुझे मुड़ कर देखने ही नहीं दिया और इस काली स्लेट पे अपना नाम लिख कर इसे पावन कर दिया! इस जिज्ञासु मन को अपने श्री चरणी लगा लिया.. आत्मविभोर हो उठी! आप तभी से आज तलक मुझे तराशते ही तो चले आ रहे हैं। धन्य हैं आप श्री हरि माँ, आप सच ही धन्य हैं! आप श्री हरि माँ का कोटि कोटि धन्यवाद, जिन्होंने अपने से अनुगृहीत किया व करते चले जा रहे हैं.. ताकि आपकी मुकम्मलता में कभी न कभी तो विराम पा जाऊँ।

यही विनीत प्रार्थना व मंगलयाचना है मेरी आप श्री माँ से!

जब आपने यह परम सत्य जनवा ही दिया कि करण-कारण आप ही आप, बस आप ही हैं.. यह आपकी कनीज़ उसी परम सत्य में जी पाये। यही इक प्रयोजन रह जाये जो परम शरण में रह पाऊँ व पल पल मिटती ही जाऊँ।

आप हे श्री हरि माँ, मेरे लिए परम वरदान हैं! असीम आदर व अतीव विनीत भाव से आपके प्रति सदा सनाथ रहूँ.. आप ही आपसे!

आप श्री हरि माँ ने अपनी चरण शरण में लेकर इसे अपने में ही मिटने का परम सौभाग्य दिया है!

हरि ओइम् तत्त सत्त

परम पूज्य मा

अर्पणा

समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
दिसम्बर २०१८

अर्पणा आश्रम से समाचार

'उर्वशी' दिवस

परम पूज्य माँ के मुखारविन्द से कई दशकों तक बहे जीवनप्रद आध्यात्मिक ज्ञान को 'उर्वशी' नाम दिया गया है। जिसने भी इसका रसास्वादन किया और इस ज्ञान का अपने जीवन में अभ्यास किया, उसे जीवन में ख़ुशी एवं तृप्ति का ही अनुभव हुआ। अर्पणा में, २ अक्तूबर को उत्साहपूर्वक एवं पूर्ण एकत्व के साथ 'उर्वशी' दिवस मनाया गया। उर्वशी भजनों की दिव्य प्रार्थनाओं से सभी का हृदय उल्लास एवं कृतज्ञता से भर उठा।

समारोह में डॉ. इला आनन्द, जिनकी अर्पणा अस्पताल की स्थापना में विशेष भूमिका रही, अपने भावोद्गार प्रस्तुत करते हुए

अर्पणा अस्पताल की सालगिरह मनाई गई..

अर्पणा अस्पताल की ३८वीं वर्ष-गाँठ के उपलक्ष्य में सभी डॉक्टरों एवं कर्मचारियों ने ख़ुशी प्रकट करते हुए सेवापूर्वक कार्य करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। १९८० से लेकर अब तक अर्पणा अस्पताल में १००० से ज़्यादा गाँवों एवं क़सबों से, १८,४२,६०१ मरीज़ों को सेवा प्रदान की गई है।

एक दिव्य यज्ञ.. प्यार और एकजुटता का

प्रत्येक वर्ष ३ दिनों के लिए डॉ. इन्दर, डॉ. राज, डॉ. लीना और डॉ. राहुल गुप्ता अपने हृदयों के साथ साथ अपने घर के द्वार भी हमारी ग्रामीण बहनों द्वारा निर्मित वस्तुओं के विपणन के लिए खोल देते हैं। इन उच्च गुणवत्ता के वस्त्रों एवं घरेलू लिनन को बहुत प्रेमपूर्वक हाथ की कढ़ाई करके गाँवों में तैयार किया जाता है। इस वर्ष भी, हमेशा की तरह, उनके प्रेम और उनके उत्साह से परिपूर्ण दिव्य वातावरण में सम्पूर्ण परिवार, मित्र एवं शुभचिंतक शामिल हुए।

गुप्ता परिवार को और हमारे सभी समर्थकों को हमारी ओर से हार्दिक धन्यवाद

अर्पणा अस्पताल

ग्रामीण रोगियों के लिए उचित दरों पर देख-भाल की अर्पणा के उद्देश्य की पूर्ति की ओर पहल..

नई कम्प्यूटेड टोमोग्राफी (सी टी) स्कैन विभाग का, रैपिड मेडिकेयर प्राइवेट लिमिटेड के साथ एक संयुक्त उद्यम परियोजना के अन्तर्गत, सीमेंस सीटी स्कैन मशीन का २ अक्तूबर को उद्घाटन किया गया।

नये कार्डियोलॉजी विभाग का भी उद्घाटन किया गया। डॉ. कमल किशोर, एमडी, डीएम (स्वर्ण पदक विजेता), आईसीएमआर पुरस्कृत इस नये विभाग के प्रमुख होंगे।

एनएबीएच प्रमाणन - डॉ. (ब्रिगेडियर) ए के चौधरी (सेवानिवृत्त), चिकित्सा अधीक्षक द्वारा घोषणा की गई कि अर्पणा अस्पताल ने एनएबीएच प्रमाणीकरण का पहला चरण सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है।

हिमाचल की गतिविधियाँ

पुनर् प्रशिक्षण शिविर, अर्पणा के डॉक्टरों द्वारा अगस्त एवं सितम्बर महीने में दाइयों के लिए आयोजित किये गये। एक दशक पूर्व, इन महिलाओं का अर्पणा के लक्षित गाँवों में दाइयों के रूप में प्रशिक्षण किया गया था; जब चिकित्सा केन्द्र तक पहुँचने में देरी हो जाती थी।

'लाइफ सेविंग' फर्स्ट एड ट्रेनिंग कैंप, श्री फ्रैंक आर्मस्ट्रांग, उत्तरी आयरलैंड के डिवीज़नल ट्रेनिंग अधिकारी, द्वारा गजनोई के अर्पणा केन्द्र में २५ और २६ सितम्बर को आयोजित किया गया। ३४ प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया, जिनमें अर्पणा के स्वयं सहायता समूहों की महिलाएँ, दूरदराज़ के गाँवों से अर्पणा द्वारा प्रशिक्षित दाइयाँ एवं अर्पणा द्वारा प्रशिक्षित पर्यटक गाइड के रूप में युवा पुरुष और महिलाएँ भी शामिल थे।

टूटी हुई भुजा का इलाज करते हुए..

निःशुल्क बहु विशिष्ट चिकित्सा शिविर

अर्पणा हैल्थ केयर एवं डायग्नोस्टिक सेंटर बकरोटा, डलहौज़ी, में २१ अक्तूबर को एक स्त्री रोग, नेत्र रोग एवं अस्थि-रोग के लिए चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। यहाँ पर डलहौज़ी, चौवाड़ी, चम्बा और सलूनी से ९५ रोगियों की जाँच की गई।

पठानकोट से डॉ. हेमन्त शर्मा (एमडी, स्त्री रोग विशेषज्ञ), डॉ. प्रशांत राणा (अस्थि-रोग विशेषज्ञ) एवं एस के सैनी (नेत्र विशेषज्ञ) ने मरीज़ों की जाँच की एवं उन्हें सलाह मश्वरा भी दिया।

स्वास्थ्य और विकास कार्यों में समर्थन के लिए टाइड्ज़ फाउंडेशन, यूएसए एवं हिमाचल के लोगों के लिए विशेष शिविरों का आयोजन करने के लिए बैजनाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली का हार्दिक धन्यवाद।

दिल्ली के कार्यक्रम

मानसिक स्वास्थ्य की ओर जागरूकता

अर्पणा ट्रस्ट से ३ शिक्षकों ने लेडी इरविन कॉलेज में 'मानसिक स्वास्थ्य पर संचार' की एक कार्यशाला में भाग लिया। उन्होंने मोलर बन्द के अर्पणा शिक्षण केन्द्र के युवा लोगों को खेलों में संलग्न करते हुए संवाद द्वारा जागरूकता उत्पन्न करने के लिए कई सत्र भी किए।

किशोर लड़कियाँ और युवा महिलाएं मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता का खेल खेलते हुए

वंचित छात्रों के लिए छात्रवृत्ति

१२ अक्तूबर को वसंत विहार स्थित 'अर्पणा रिजॉयस सेंटर' में छात्रवृत्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पाँच श्रेणियों के अन्तर्गत ५० बच्चों को छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया। इसके द्वारा छात्रों को स्कूल में रहने के लिए प्रेरणा मिलती है और इसके अतिरिक्त अन्य सहायता भी दी जाती है।

'रिजॉयस' में छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले बच्चे

अर्पणा द्वारा मोलरबन्द एवं वसंत विहार में वंचित लोगों के लिए छात्रवृत्ति और शिक्षण कार्यक्रमों में सहायता के लिए महान दाताओं का गहराई से आभार!

मोरिंगा वृक्ष - सभी के लिए पोषक तत्व

बेहतरीन पोषण विशेषज्ञों में से एक, डॉ. वीना अग्रवाल ने २९ सितम्बर को वसंत विहार स्थित अर्पणा 'रिजॉयस केन्द्र' में मोरिंगा के पोषण के महत्व पर चर्चा की। मोरिंगा से बनी स्वादिष्ट वस्तुएं, जैसे काठी रोल्स इत्यादि सभी को परोसे गये। सभी ख़ुश हुए और व्यंजनो को बनाने की विधि भी आपस में साझा की गई।

हरियाणा ग्रामीण

'अर्पणा दुर्गा वाहिनी' - अच्छाई के लिए एक सेना

अर्पणा के स्वयं सहायता समूहों द्वारा जन कल्याण हेतु ५० महिलाओं द्वारा 'दुर्गा वाहिनी' नामक एक सेना का गठन किया गया जो घरेलू हिंसा एवं अवैध शराब की बिक्री के विरोध में काम करता है।

ये महिलाएं रात्रि के समय पहरेदारों के रूप में घर से बाहर निकलती हैं। ये सप्ताह में ३ बार पंचायत द्वारा समर्थन प्राप्त नियमित बैठकों में गाँवों की स्थितियों के विषय में बातचीत करती हैं। इससे अवैध शराब की बिक्री के साथ साथ उत्पीड़न और गुंडागर्दी भी काफ़ी कम हो गई है।

अर्पणा के एसएचजी की वरिष्ठ महिलाओं ने मुख्यमंत्री को मिठाई भेंट की - जिसका उन्होंने मंच पर 'भीम ऐप' द्वारा भुगतान किया।

हरियाणा में 'भीम ऐप' आरम्भ करने पर अर्पणा

'भीम ऐप' प्रधानमंत्री द्वारा की गई एक पहल है जिसका प्रयोग मोबाइल फ़ोन द्वारा प्रत्यक्ष भुगतान के लिए किया जा सकता है। हरियाणा के सार्वजनिक उद्‌घाटन समारोह में मुख्यमंत्री श्री खट्टर जी ने भी भाग लिया। अर्पणा के ग्रामीण विभाग से कर्मचारी एवं २०० स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने भी इसमें भाग लिया। यहाँ टपराना महिला डेयरी समूह द्वारा एक स्टॉल लगाया गया जहाँ मुख्यमंत्री सहित सभी गणमान्य व्यक्ति आये।

हरियाणा में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के अनुदान के लिए हम टाइड्ज़ फाउंडेशन, यूएसए एवं अन्तर्राष्ट्रीय आपदा और राहत कोष (IDRF) **यूएसए के अत्यन्त आभारी है।**

We, at Arpana, depend on your support for our programs

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.

FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001

FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002

Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to:

Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037

Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:

Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037

Send contributions in USA to:

Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive, North Bethesda, MD 20852

Mr. Jagjit Singh, AID for Indian Development, 84 Stuart Court, Los Altos, CA 94022-2249

Send contributions to Arpana Canada:

c/o Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton, Ontario L6Y 3S9, Canada

Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.

Information & Resources Office: 91-184-2390905 **Executive Director:** 91-9818600644

emails: **at@arpana.org and arct@arpana.org**

Contact person: Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9991687310

Websites: **www.arpana.org** **www.arpanaservices.org**

Arpana Ashram

Research

Publications & CDs

Arpana endeavours to share its treasure of inspiration – the life, words and precept of *Pujya Ma*, through the publication of books and cassettes.

Publications			
गीता	Rs.300	Bhagavad Gita	Rs.450
कठोपनिषद् हिन्दी	Rs.120	Kathopanishad	Rs.120
श्वेताश्वतरोपनिषद्	Rs.400	Ish Upanishad	Rs.70
केनोपनिषद्	Rs.36	Prayer	Rs.25
माण्डूक्योपनिषद्	Rs.25	Love	Rs.20
ईशावास्योपनिषद्	Rs.20	Words of the Spirit	Rs.12
प्रश्नोपनिषद्	Rs.50	Notes	Rs.10
गंगा	Rs.40	**Bhajan CDs**	
प्रज्ञा प्रतिभा	Rs.30	ईशावास्योपनिषद् (a deluxe 8 CD set)	Rs.2000
ज्ञान विज्ञान विवेक	Rs.60	स्वरांजलि - भाग १ और २	Rs.175each
मृत्यु से अमृत की ओर	Rs.36	नमो नमो	Rs.175
जपु जी साहिब	Rs.70	उर्वशी भजन	Rs.175
भजनावली	Rs.80	हे राम तुझे मैं कहती हूँ	
वैदिक विवाह	Rs.24	- भाग १	Rs.75
गायत्री महामन्त्र	Rs.20	गंगा (भाग १ और २)	Rs.75each
नाम	Rs.15	राम आवाहन	Rs.75
अमृत कण	Rs.12	तुमसे प्रीत लगी हे श्याम	Rs.75
Lets Play the Game of Love	Rs. 400	हे श्याम तूने बंसी बजा	Rs.75

For ordering of books, please address M.O./DD to: **Arpana Publications** (payable at Karnal). Kindly add Rs. 25 to books priced below Rs. 100 & Rs. 40 to books above Rs. 100 as postal charges

Arpana Pushpanjali

Hindi/English Quarterly Magazine

Subscription	**Annual**	**3yrs.**	**5yrs.**
India	130	375	600
Abroad	350	1000	1650

Advertisement	**Single**	**Four**
Special Insertion (Art Paper)	10,000	
Colour Page	3500	12,000
Full Page (b&w)	2000	6000
Half Page (b&w)	1200	4000

(Amounts are in Rupees)

Subscription drafts to be addressed to: **Arpana Trust (Pushpanjali & Publications)**

Delhi Contact Person:
Mr. Inderjeet Anand
E - 22 Defence Colony,
New Delhi 110024
Tel: 41553073

Donation cheques to be addressed to: Arpana Trust (payable at Delhi)

Arpana Trust *- Donations for Spiritual Guidance Activities, Publications, Scholarships and Delhi Slum Project. Regd. under FCRA (Regd, number 172310001) to receive overseas donations.*

Applied Research

Medical Services

In Haryana

- 130 bedded rural Hospital
- Maternity & Child Care
- Family Planning
- Eye Screening Camps
- Specialist Clinics
- Continuing Medical Education

In Himachal

- Medical & Diagnostic Centre
- Integrated Medical & Socio-Economic Centre

In Delhi Slums

- Health care to 50,000
- Immunisations
- Antenatal Care
- Ambulance

Women's Empowerment

Capacity Building

- Entrepreneurial activities
- Local Governance
- Micro-Planning
- Legal literacy

Self Help Groups

- Savings
- Micro credit
- Federation
- Community Health
- Exposure Visits

Gender Sensitization

Income Generation through Handicraft Training Skills

Child Enhancement

Education

- Children's Education
- Vocational Education
- Cultural Opportunities
- Day Care Centres
- Pre-school Care & Education

Health

- Nutrition Programme
- School Health Programme

In Delhi Slums

- Environment, Building Parks & Planting trees
- Housing Project
- Waste Management

Arpana Research and Charities Trust *Exempt U/S 80 G (50% deduction) on donations for the hospital & Rural Health Programmes. Regd. under FCRA (Regd. number 172310002) to receive overseas donations.*

Contact for Questions, Suggestions and Donations:

Mr. Harishwar Dayal, Executive Director, Arpana Group of Trusts, Madhuban, Karnal - 132037, Haryana.
Tel: (0184) 2380801- 802, 2380980 Fax: 2380810 Email: at@arpana.org / Web site: www.arpana.org

All donation cheques/ DD to be addressed to : ARPANA TRUST (payable at Karnal)